International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 27-29

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 27-29
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-03-2017
Accepted: 09-04-2017

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

सुरेन्द्र कुमार ठाकुर
एम.फिल् संस्कृत,
डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर संस्कृत विभागाध्यक्ष
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय
करगी रोड कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

उत्तररामचरितम् में पुरूष पात्र एक अध्ययन

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, सुरेन्द्र कुमार ठाकुर

सारांश
महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उन्होंने उत्तररामचरितम्, महावीर चरितम् एवं मालतीमाधव नामक तीन नाटक लिखे हैं। निःसंदेह तीन नाटक सर्वोत्कृष्ट है। उत्तररामचरितम् सर्वाधिक प्रसिद्ध नाटक है। यह महाकवि भवभूति का अकेला नाटक है जो महाकवि कालिदास के समक्ष लाकर खड़ा कर दिया है। महाकवि भवभूति ने अपने नाटकों में पात्रों के चयन पर विशेष ध्यान दिया है। नाटक के पात्र जितना सुन्दर सजीव एवं गुणी होगे नाटक उतना ही सफल सिद्ध होगा। नाटक के पात्रों के चारित्रिक विशेषता का एक प्रमुख महत्व होता है। नाटककार विभिन्न प्रकार के पात्रों के माध्यम से अपने युगीन जीवन का जीता – जागता चित्र अंकित करता है।
अतः नाटकों में चरित्र–चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। भवभूति के नाटक उत्तररामचरितम् में पुरूष एवं स्त्री पात्रों का वर्णन प्राप्त हैं किन्तु मैंने अपने शोध का विषय उत्तररामचरितम् के पुरूष पात्र लिया है, जिसमें पुरूष पात्रों को दो भागों में विभाजित कर उनके विषय में वर्णन किया जायेगा।

कुट शब्दः उत्तररामचरितम्, पुरूष पात्र, नाटक सर्वोत्कृष्ट, महाकवि कालिदास

प्रस्तावना
उत्तररामचरितम् में पुरूष पात्र

भवभूति के नाटक उत्तररामचरितम् के आधार पर हमने उसके पुरूष पात्रों को दो भागो में विभाजित किया है –

- प्रमुख पुरूष पात्र
- गौण पुरूष पात्र

1. प्रमुख पुरूष पात्र

प्रमुख पुरूष पात्र के अन्तर्गत वें पुरूष पात्र है जिनकी कथा पताका के रूप में दूर तक चलती है।

2. गौण पुरूष पात्र

गौण पुरूष पात्रों में उनके दास तथा अन्य पुरूष पात्र है जिनकी कथा पकरी के रूप में जल्द ही समाप्त हो जाती है।

प्रमुख पुरूष पात्र

1. राजा राम

श्री रामचन्द्र जी उत्तररामचरितम् के दिव्या धीरोदात्त नायक है। धीरोदात्त नायक का लक्षण–

> अविकथन क्षमावान अतिगम्भीरो महासत्वः।
> स्थेयान् निगूढमानों धीरोदात्तो दृढवतः कथित।।[1]

धीरोदात्तप्रकृति का नायक भी प्रायः राजा या राजकुलोत्पन्न होता है। वह निरभिमानी अत्यन्त गम्भीर स्थित तथा अविकथन होता हैं। जिस व्रत को वह धारण कर लेता है, उसे छोड़ता नहीं। धीरोदात्त नायक सम्पूर्ण आदर्शों से युक्त होता है। नाटक का नायक इसी प्रकृति का चुना जाता है। वे विष्णु के अवतार माने जाते हैं। लोक प्रतिष्ठित मर्यादा के सुरक्षा में सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर देने के कारण मर्यादा पुरूषोत्तम् कहलाते हैं। उत्तररामचरितम् में राम आदर्श पति आदर्श पिता तथा आदर्श राजा के रूप में चित्रित किये गये हैं। पतिव्रत के रूप में साक्षात् मूर्ति है।

सीता के निष्कासन के बाद अश्वमेध यज्ञ में वे उनकी सोने की प्रतिभा को ही सधर्म चारणी के रूप में नियुक्त करते हैं। संसार में उससे अधिक उत्कृष्ट एक पत्नी व्रत का उदाहरण मिलना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है–

यथा समादिशति भगवान् मैत्रावरणि :।
स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकिमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतों नास्ति में व्यवस्था।।[2]

बचपन से ही शांत स्वभाव के वीर पुरूष थे उन्होंने मर्यादा को हमेशा सर्वोच्च स्थान दिया था। इसी कारण मर्यादा पुरूषोत्तम के नाम से जाने जाते हैं। उनका राज्य न्याय प्रिय और खुशकाल माना जाता था इसलिए भारत में जब भी सुराज की बात होती है, रामचन्द्र का उदाहरण दिया जाता है। धर्म के मार्ग पर चलने वाले राम अपने तीनों भाइयों के साथ गुरू वशिष्ठ से शिक्षा प्राप्त की।

2. लक्ष्मण

लक्ष्मण रामायण के आदर्श पात्र है। इनको शेषनाग का अवतार माना जाता है। रामायण के अनुसार राजा दशरथ के तीसरे पुत्र थे उनकी माता सुमित्रा थी। वे राम के भाई थे, इन दोनों भाइयों में अपार प्रेम था। उन्होंने राम सीता के साथ 14 वर्षों का वनवास किया। मंदिरों में अकसर ही राम – सीता के साथ उनकी पूजा होती है। उनके अन्य भाई भरत और शत्रुघ्न थे। राम सीता से कह रहे हैं कि–

स्मरसि सुतनु! तस्मिन् पर्वते लक्ष्मणेन
प्रतिविहितसपर्यासुस्थयोस्तान्यहानि।
स्मरसि सरसनीरां तत्रं गोदावरीं वा
स्मरसि च तदुपान्तेष्वावयो वर्तनानि।।[3]

हे सुन्दरी! उस प्रस्रवण पर्वत पर लक्ष्मण द्वारा कि गई सेवा से प्रसन्न (हम दोनों के) उन दिनों का स्मरण करती हो, जब कि हम दोनों लक्ष्मण के द्वारा क्षुधा तृषादि के निवारण रूप सेवा से प्रसन्न होकर उस प्रस्रवण पर्वत पर निवास कर रहे थे जहाँ पर स्वादुजला गोदावरी नदी बह रही थी और उसके समीपस्थ वन प्रदेशों में हम लोग विहार करते थे।

लक्ष्मण एक आदर्श अनुज है। राम को पिता राजा दशरथ ने वनवास दिया किन्तु राम के साथ स्वेच्छा से वन गमन करते हैं –ज्येष्ठानुवृत्ति, स्नेह तथा धर्म के कारण राम के साथ उनकी पत्नी सीता के होने से उन्हें आमोद–प्रमोद के साधन प्राप्त है। किन्तु लक्ष्मण के समस्त आमोदो का त्याग करके केवल सेवा भाव को हि अपनाया। वास्तव में लक्ष्मण का वनवास राम के वनवास से भी महान् है।

3. शत्रुघ्न

शत्रुघ्न रामायण के अनुसार राजा दशरथ के चौथे पुत्र थे उनकी माता सुमित्रा थी। वे राम के भाई थे और उनके अन्य भाई भरत और लक्ष्मण। शत्रुघ्न और लक्ष्मण जुड़वा भाई थे। वाल्मीकि रामयण में वर्णित है कि आयोध्या के राजा दशरथ के तीन रानियां थी, कौशल्या, कैकेई और सुमित्रा। कौशल्या से राम कैकेई से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न उत्पन्न हुए थे। शत्रुघ्न ने मधुपुरी (आधुनिक मथुरा के) शासक लौवणासूर को मारकर मधुपुरी को फिर से बसाया था। शत्रुघ्न कम से कम 12 वर्ष तक मधुपुरी नगरी एंव प्रदेश के शासक रहे।

4. राजा जनक

महराज जनक मिथिला के अधिपति हैं इस नाटक के चतुर्थ अंक के प्रारम्भ में ही वाल्मीकि के शिष्य सौधातकि और दाण्ड़ायन के परस्पर वार्तालाप से विदित होता है कि महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में वसिष्ठ अरून्धति राम कि माताएं और जनक आदि अतिथि के रूप में आये हैं।

मिथिला के राजा और निमि के पुत्र थे जनक नन्दिनी सीता का विवाह आयोध्या के राजा दशरथ के ज्येष्ठ. पुत्र श्री राम के साथ हुआ था इसके छोटे भाई का नाम शत्रुघ्न था। तत्कालिन समय में राजा जनक अपने – अपने अध्ययन तथा तत्व ज्ञान के लिए बहुत ही प्रसिद्ध थे उनकी विद्या की हर कोई प्रशंसा करता है उनका दर्शिनिक ज्ञान जगत में विद्यमान हैं वे अत्यन्त दर्शनिक होते हुए भी सहृदय हैं तभी तो सीता के दुखः से दुखित है उनके वात्सल्य हृदय सीता के दारूण दुखः को सहन कर सकने में असमर्थ हैं हम देखते हैं कि महाराज जनक आश्रम में प्रवेश करते ही सीता के शोक में विलाप करते हुए कहते हैं –

अपत्ये यत्ताद्दग्दुरितमभवत्तेन महता,
विषक्तस्तीव्रेण वर्णितहृदयेन व्यथयता।
पटु र्धारावाही नव इव चिरेणपि हि न मे,
निकृन्तन्मर्माणि क्रकच इव मन्यु विरमति।।[4]

राजर्षि जनक कहते है कि मेरी पुत्री सीता के विषय में जो निरपराध परित्यागरूप असहनीय अनर्थ हुआ है, वह मेरे हृदय को अत्यधिक वर्णित एंव पीड़ित करने वाला है, यह शोक हृदय को विर्दीण करने में पूर्णतया समक्ष एंव निरन्तर रहने वाला है, यद्यिपि अधिक समय बीत चुका है तथापि आज भी वह नवीन सा प्रतीत हो रहा है यह मेरे हृदय आदि गर्म स्थलों को उसी प्रकार छेदता रहता है जैसा आरा लकड़ी को छेदता है। किन्तु फिर भी शान्त नहीं हो रहा है। इससे ज्ञात होता है कि जनक अपने पुत्री सीता के साथ घटी घटना से अधिक दुखी है।

5. महर्षि वाल्मीकि

प्राचिन भारतीय महर्षि हैं। ये आदि कवि के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने संस्कृत में रामायण की रचना की। उनके द्वारा रचि रामायण वाल्मीकि रामायण कहलाई। रामायण एक महाकाव्य हैं जो श्री राम के माध्यम से जीवन के सत्य के कर्त्तव्य से परिचित कराता है। वाल्मीकि को प्राचीन वैदिक काल के ऋर्षियों के श्रेणियों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। वे संस्कृत भाषा के आदि कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। लक्ष्मण कहते हैं कि–

राज्याश्रमनिवासोऽपि प्राप्तकष्टमुनिव्रतः।
वाल्मीकिगौरवादार्य इत एवाभिवर्तते ।।[5]

सज्जनों ! आज भगवान वाल्मीकि ने हम लागों के साथ ही ब्राह्मण क्षत्रिय नागरिक एंव ग्रामवासियों के सहित सभी प्रजाजनों को बुलाकर देवता असुर और पशु–पक्षी समूह के साथ समस्त जड़ चेतन प्राणी समूह को अपने प्रभाव से अपने समीप एकत्र कर लिया है।

6. लव और कुश

लव और कुश यमज भाई हैं। कुश बड़े और लव छोटे हैं। ये दोनों अपने पिता राम के समान हैं गुणों से परिपूर्ण हैं वाल्मीकि ने अपने आश्रम में दोनों बालकों का पालन–पोषण किया है और क्षत्रियोचित संस्कार करके संपूर्ण विधाएँ प्रदान की हैं। इन दोनों कुमारों में सभी क्षत्रिय योचित गुण विद्यमान हैं। जृम्भकास्त्र इन्हें जन्मतः स्वतः सिद्ध है।

महाकवि भवभूति ने लव को कुश की अपेक्षा इस नाट्य में अधिक स्थान दिया है, महत्व की दृष्टि से ही केवल भूमिका की दृष्टि से। लव ने औद्धत्य है। आत्मप्रख्यान है और शैशव के अमित लक्षण उसमें स्पष्ट दिखाई देते हैं महराज जनक को इस शिशु में सीता तथा राम की आकृति दृष्टिगोचर होती है। जनक कहते हैं कि –

वत्सायाश्च रघूद्वहस्य च शिशावस्मिन्नभिव्यज्यते,
संवृत्तिः प्रतिबिम्बतेव निखिला सैवाकृतिः सा द्युतिः।
सा वाणी विनयः स एव सहजः पुष्यानुभावोऽप्यसो,
हा हा देवि किमुत्पथैर्मम मनः पारिप्लवं धावति।।[6]

अर्थात् लव को देखकर जनक कहते हैं कि – इस बालक में बेटी सीता का और रघुकुल श्रेष्ठ राम का संबंध प्रतिबिम्बत सा दिखाई पड़ रहा है। सीता राम के समान ही वही संपूर्ण आकार वही कांति वही वाणी वही स्वभाविक विनयशीलता और वही पवित्र तेज भी है।

7. चन्द्रकेतु

लक्ष्मण के अंगद तथा चन्द्रकेतु नामक दो पुत्र हुए जिन्होंने क्रमशः अंगदीया पुरी तथा चन्द्रकांता पुरी की स्थापना की –

किरति कलितकिंचित्कोपरज्यन्मुखश्री
रविरतगुणगुञ्जत्कोटिना कार्मुकेण।
समरशिरसि चञ्चत्पञ्चचूडश्चमूना–
मुपरि शरतुषारं कोऽप्ययं वीरपोंतः।।[7]

सारथी सुमन्तः के साथ रथ पर बैठे हुए हाथ में धनुष लिये चन्द्रकेतु शीघ्रता के साथ प्रवेश करते हुए वीर बालक लव को देखकर चन्द्रकेतु सुमन्तः से कहते हैं यह कोई अपरिचित वीर बालक जिसकी मुखकांति उत्पन्न हुए क्रोध से लाल हो गई हैं, और जिसकी पांच चोटियाँ हिल रही हैं, संग्राम के अग्र भूमि में खड़े होकर उस धनुष से प्रत्यञ्चा पर धनुष कोटियाँ लगातार गुञ्जायमान हो रही है, हमारी सेनाओं के ऊपर उसी प्रकार निरंतर वाणों की वर्षा कर रहा है।

8. कञ्चुकी

यह महासेना के अंतःपुर का प्रमुख संरक्षक विद्वान ब्राह्मण है। वह हाथ में छड़ी पकड़े अतःपुर स्त्रीयों की सेवा में रहता था। कंञ्चुकी को वार्धक्य में भी विश्राम नहीं मिलता था। अंतःपुर के नियमों के पालन के लिए पकड़ी छड़ी वार्धक्य में उसके सहारे की वस्तु बन जाती थी। वृद्धा अवस्था में सेवानिवृत्ति उसके लिए कारावास सी थी। कञ्चुकी वृद्धा अवस्था में पीड़ित राजा के सभी व्यवहारों का अनुकरण करता था वह सिंहासन के समीप खड़ा रहता, आगन्तुक राजा से मिलाता एवं राजकीय संदेश लाता ले जाता था।

उत्तरामचरितम् के गौण पुरूष पात्र

1. अष्टावक्र

अद्वेत वेदांत के महत्वपूर्ण ग्रन्थ अष्टावक्र गीता के ऋषि हैं। अष्टावक्र गीता अद्वेत वेदांत ग्रन्थ का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अष्टावक्र का अर्थ हैं– आठ जगहों से टेढ़ा होता है। कहते हैं कि अष्टावक्र का शरीर आठ जगहो से टेढ़ा है। उद्दालक ऋषि के पुत्र का नाम श्वेतकेतु था। उद्दालक को संपूर्ण वेदों का ज्ञान देने के पश्चात् उद्दालक ऋषि ने उसके साथ अपनी रूपवती एवं गुणवती कन्या सुजाता का विवाह कर दिया। कुछ दिनों के बाद सुजाता गर्भवती हो गई। एक दिन कहोण वेद पाठ कर रहे थे तो गर्भ के भीतर से बालक ने कहा कि पिता जी आप वेद का गलत पाठ कर रहे हैं यह सुनते हि कहोड़ क्रोधित होकर बोले तु गर्भ से मेरा अपमान कर रहा है इसलिए तु आठ स्थानों से टेढ़ा हो जायेगा। तभी से उसका नाम अष्टावक्र हो गया।

2. दुर्मुखः

यह गुप्तचर का नाम है। यह गुप्तचर अमड़ग्लजनक तथा कष्ट प्रद समाचार लाता था। इसके लाये हुए समाचार का फल यह हुआ कि श्री रामचन्द्र जी को सीता परित्याग करना पड़ा। ऐसे दूत को दुर्मुख कहना ही उपयुक्त है। रामायण में इसका नाम भद्र है।

उपसहांर

काव्य प्रधानतः अभिनय शब्द संवादों से नाटक आदि रूपों में सहृदयों को श्रव्य काव्य की अपेक्षा अधिक आनंदानुभूति कराता है। पात्र कल्पना और चरित्र– चित्रण नाट्य विद्या के प्रमुख तत्व हैं। नाटककार अपने चरित्र– चित्रण के माध्यम से ही अपने अनुभवोंः मौलिक दृष्टि और युगीन परिस्थितियों का परिचय देता है। नाटक के रचना के अन्य तत्व की कथा वस्तु संवाद और स्थितियों आदि चरित्र से संबंध होकर ही सार्थकता अर्जित करते हैं।

इस प्रकार महाकवि भवभूति के उत्तररामचरितम् से पता चलता है। कि उन्होंने पुरूष पात्रों पर विशेष ध्यान दिया है, उनकी दृष्टि में पुरूष का उँचा एवं पवित्र स्थान है वे उन्हें श्रद्धा के साथ देखते हैं। श्रेष्ठ पुरूष पात्रों के चित्रण के कारण ही उत्तररामचरितम् नाटक आकर्षक बन सका है।

अतः हम कह सकते हैं कि नाटककार भवभूति उत्तररामचरितम् नाटक के प्रमुख पात्रों के चरित्र–चित्रण में पूर्ण रूपेण सफल हुए हैं।

संदर्भ

1. व्यास डॉ. भोला शंकर सन्–2013 दशरूपक चौखम्भा सुरभरती प्रकाशन वाराणसी–2/4 पृष्ठ सं. 81
2. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–1/12 पृष्ठ सं. 34
3. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–1/26 पृष्ठ सं. 66
4. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–4/3 पृष्ठ सं. 124
5. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–7/1 पृष्ठ सं. 327
6. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–4/22 पृष्ठ सं. 165
7. त्रिपाठी डॉ. बाबूराम सन् –2016 उत्तररामचरितम् महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा–5/02 पृष्ठ सं. 188